रात्रिक्लास 27.3.68 ओमशान्ति ''शिवबाबा याद है?

यह है सम्बन्ध। रूहानी बाप और जीवात्माओं का सम्बन्ध। जीवात्माओं को तो अपना शरीर है, बाप को नहीं है। बेहद का बाप और जीवात्माएं। शिवबाबा को जीवात्मा नहीं कहेंगे। कहते हैं यह मेरा शरीर नहीं है। यह उनका जीव तो नहीं है ना। बाप कहते हैं जिस आत्मा ने 84 जन्म लिया है उन आत्माओं से बात करता हूं। जो अपन को पतित समझते हैं। मनुष्य तो हर बात में बेसमझ है। बाप सिद्ध कर बतलाते हैं तुम बिल्कुल ही तमोप्रधान बन गये हो। किसको पतित कहो तो बिगड़ पड़े। पतितपने का अर्थ नहीं समझते। बाप कहते हैं कितने तुम कांटे हो। बन्दर हो। तुमने समझा है तो अर्थ समझते हो। नये कोई आते हैं तो फट से यह नहीं कहना है। पहले तो बिठाना चाहिए। कहते हैं ज्ञान की बातें सुनने लिए आये हैं। ज्ञान क्या है वह तो जानते ही नहीं। भक्त ज्ञान को चाहते हैं ; क्योंकि ज्ञान से ही सद्गति होता है; परन्तु यह जानते नहीं है। शास्त्रों को ही ज्ञान समझते हैं। उनको यह पता नहीं है यहां ईश्वर ज्ञान सुनाते हैं। ज्ञान सागर है ही वह। यह बिल्कुल नई बातें हैं। भगवान बाबा है वह आया हुआ है वर्सा देने। इतना बुद्धि में बैठे तब कुछ समझे। चित्र तो लक्ष्मी–नारायण का हरेक मन्दिर में है; परन्तु समझाने वाला कोई है नहीं। तुम समझाते हो शिवबाबा सभी का बाप है और निराकार है। भगवान ब्रह्मा–विष्णु–शंकर द्वारा स्थापना, विनाश, पालना कराते हैं। लिखा हुआ भी है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। है ही त्रिमूर्ति। ब्रह्मा है ही स्थापना करने लिए। और दूसरे जगह कहां जावेंगे? भगवान को स्थापना भी यहां ही करनी है। सृष्टि का चक्र फिरता ही रहता है। सेन्सीबुल मनुष्य समझ जावेंगे। 5000 वर्ष बाद सभी को आना पड़ता है। जो भी चीज़ है, कखपन आदि जो है फिर 5000 वर्ष बाद यह चीज़ें होंगी। कहते हैं चीज़ टूट गई वह फिर कैसे होगी? बहुत प्रश्न करते हैं। मूल बात है लौकिक बाप, पारलौकिक बाप। लौकिक होते भी पारलौकिक को याद करते हैं; क्योंकि रावण राज्य में सभी दुःखी हैं। दुः,ख में ही पुकारते हैं। वहां दुःख तो होता ही नहीं। जब यहां कोई आते हैं तो आधा/पौना घन्टा समझाते हो। म्यूज़ियम वा प्रदर्शनी में तो ऐसे नहीं होता है। पहली बात है अलफ़। यह पुरुषोत्तम संगमयुग पर यह (ल.ना.) बनना है। समझाना तो बहुत पड़ता है। जब तक अलफ़ न समझा है बुद्धि में बैठेगा नहीं। जो फर्क समझाते हैं उनको बाप का परिचय है। हम बाप के बच्चे थे तो ज़रूर स्वर्ग के मालिक बने होंगे। अगर नहीं समझते हो तो समझा जावेगा तुम स्वर्ग में नहीं थे। स्वर्ग के भांति नहीं थे। भांति बनने से ज़रूर यहां आना पड़ेगा। सतयुग, त्रेता से तो द्वापर, कलियुग के .... बहुत हैं। 3–4 बच्चे पैदा करते हैं। तो बहुत वुद्धि हो जाती है ना। अच्छा, बाप को याद करो। बाप कहते हैं मुझे अपने बाप को याद करो। तुम्हारी बुद्धि शिवबाबा तरफ चली जावेगी। परमधाम ही याद पड़ेगा। बच्चे समझते हैं शिवबाबा ही पढ़ाते हैं। तो तुम चार्ट में लिख सकते हो इतना समय हम बाबा से सम्मुख पढ़ते रहे। यहां तुम सम्मुख बैठे हो। बाप पढ़ा रहे हैं। बुद्धि बाहर कहां चली गई तो गोया योग ही न रहा। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट।